# गाड़ी पर निकले अपनी सवारी

**आपका फायदा**

**परिवार की पहली कार हो या किसी ट्रांसपोर्टर का नया ट्रक, इस खरीद के लिए लिया गया लोन आने वाले कई सालों तक घर या बिजनेस के बजट को प्रभावित करता है। लोन मिलना तो आसान हुआ है, मगर एक बड़ा सवाल यह है कि क्या हमें नई गाड़ी खरीदनी चाहिए या एक अच्छी सेकंड-हैंड गाड़ी? बता रहे हैं फाइनेंस एक्सपर्ट सुदर्शन होला...**

भारत में गाड़ी खरीदना सिर्फ जरूरत नहीं, बल्कि परिवार के सपनों व किसी व्यवसायी की तरक्की से जुड़ा फैसला है। मगर इस फैसले के साथ गाड़ी कौन सी लें और अगर लोन पर गाड़ी ली है तो किस तरह होगा मैनेज, ऐसे सवाल भी जुड़ जाते हैं। सही फैसला लेने के लिए आपको अपनी जेब, हर महीने ईएमआइ भरने की क्षमता, गाड़ी का इस्तेमाल, मेंटेनेंस का खर्च और लक्ष्य का ध्यान रखना होगा।

## नई का है अपना भरोसा

एक नई कार खरीदने के अपने फायदे हैं। आपको कंपनी की वारंटी मिलती है, लेटेस्ट फीचर्स मिलते हैं, शुरुआती सालों में पेड सर्विसिंग का झंझट नहीं होता और सबसे बड़ी बात- मानसिक शांति। नए वाहनों पर लोन की ब्याज दरें भी आमतौर पर थोड़ी कम होती हैं, लेकिन दूसरा पहलू यह है कि नई गाड़ियों की कीमत का मूल्यांकन शुरुआती 2-3 सालों में बहुत तेजी से गिरता है, जिसे डेप्रिसिएशन (मूल्यह्रास) कहते हैं। दूसरी ओर, एक अच्छी स्थिति वाली पुरानी गाड़ी इस नुकसान को पहले ही झेल चुकी होती है, जिससे वह आपको किफायती दाम पर मिल जाती है।

### क्या है आपके लिए सही चुनाव?

अगर आप लेटेस्ट टेक्नोलाजी, कंपनी की वारंटी और बहुत लंबे समय तक गाड़ी अपने पास रखना चाहते हैं, तो नया वाहन आपके लिए सही है। यदि आप कम बजट में, बिना किसी बड़े कर्ज के अपनी जरूरत पूरी करना चाहते हैं और वित्तीय रूप से सुरक्षित रहना चाहते हैं, तो पुरानी गाड़ी आपके लिए समझदारी भरा फैसला है।

## किफायती है सेकंड-हैंड बाजार

कुछ सालों में पुरानी गाड़ियों का बाजार बहुत बदल गया है। बड़ी कंपनियों के संगठित प्लेटफार्म, गाड़ी की पूरी जांच रिपोर्ट और आसान फाइनेंस विकल्पों ने खरीदारों का भरोसा बढ़ाया है। पहली बार गाड़ी चलाना सीख रहे लोगों के लिए तो पुरानी गाड़ी एक वरदान की तरह है। इससे वे बिना किसी बड़े वित्तीय बोझ के ड्राइविंग सीखकर आत्मविश्वास हासिल कर सकते हैं और घर के अन्य जरूरी खर्चों या बचत के लिए भी पैसे बचा सकते हैं। उदाहरण के लिए, अगर कोई व्यक्ति 10 लाख रुपये की नई कार के बजाय 6.5 लाख रुपये की एक प्रमाणित पुरानी कार चुनता है, तो उसका लोन अमाउंट बहुत कम हो जाता है। इससे न सिर्फ हर महीने की ईएमआइ कम होती है, बल्कि ब्याज बड़े अंतर के बावजूद इसके रूप में जेब से जाने वाला कुल पैसा भी बच जाता है।

## अगर दे रहे हैं पैसेंजर सर्विस

पैसेंजर कामर्शियल वाहनों जैसे- लाइट कामर्शियल व्हीकल, स्कूल बस या स्टाफ वैन के मामले में हिसाब पूरी तरह बदल जाता है। यहां गाड़ी सिर्फ कमाई करने (रेवेन्यू जेनरेटिंग एसेट) के लिए ली जाती है। इसकी हर ईएमआइ गाड़ी द्वारा की गई कमाई से ही निकलनी चाहिए। नया कामर्शियल वाहन बेहतर माइलेज, वारंटी सुरक्षा, कम मेंटेनेंस और उच्च विश्वसनीयता देता है। लंबी दूरी के रूट, कार्पोरेट कांट्रैक्ट या तय समय वाली पैसेंजर सर्विस के लिए नया वाहन अधिक फायदेमंद साबित होता है।

## कम बजट में ट्रांसपोर्ट सर्विस

फिर भी भारत के ट्रांसपोर्ट इकोसिस्टम में पुरानी गाड़ियों की भूमिका आज भी बहुत बड़ी है। पहली पीढ़ी के ट्रांसपोर्टर (जो नया बिजनेस शुरू कर रहे हैं) व छोटे फ्लीट आपरेटरों के लिए कम लोन के साथ पुरानी गाड़ी बिजनेस में उतरने का सबसे सुरक्षित जरिया है। ट्रांसपोर्ट के क्षेत्र में गाड़ी की उम्र से ज्यादा इस बात का महत्व है कि गाड़ी कितनी इस्तेमाल हो रही है। अच्छी तरह से मेंटेन की गई पुरानी गाड़ी, जो लगातार रूट पर चल रही है और नियमित कमाई कर रही है, भारी-भरकम ईएमआइ वाले नए ट्रक से कहीं अधिक लाभ दे सकती है। ट्रांसपोर्टर अगर 30 लाख रुपये का नया ट्रक खरीदने के बजाय 18-20 लाख रुपये का अच्छा पुराना ट्रक लेता है, तो उसकी लोन की जरूरत कम हो जाती है। इससे उसका कैश फ्लो (नकद प्रवाह) बेहतर रहता है और गाड़ी की कीमत भी जल्दी वसूल (शार्ट पेबैक पीरियड) हो जाती है।

**(लेखक श्रीराम फाइनेंस के जाइंट एमडी और सीओओ हैं)**